रोपाई की अपेक्षा धान की सीधी

राष्ट्रीय सहारा, दि० - 11/07/23, पे० नं० - 05

बुआई एक सफल विकल्प : भारती

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली की वैज्ञानिक भारती उपाध्याय ने बताया कि धान की परंपरागत विधि में खेती में लागत की बढ़ोतरी, सिंचाई एवं श्रमिक की ससमय अनुपलब्धता एवं मृदा स्वास्थ्य की समस्या के समाधान के लिए रोपाई की अपेक्षा धान की सीधी बुवाई एक सफल एवं भरोसेमंद विकल्प है। धान की सीधी बुवाई के लिए कुछ सीमाएं निर्धारित है। जैसे सही किस्मों का चयन, एक समान तथा अच्छे अंकुरण के लिए सही मशीन का चयन, सही समय पर बुवाई तथा बीज की गहराई। अभी किसान भाइयों को मध्यम अवधि की किस्में जैसे राजेंद्र श्वेता, बीपीटी 5204, राजेंद्र कस्तूरी का चयन कर सकते है या शीघ्र पकने वाली किस्में जैसे प्रभात, सभागी, राजेंद्र भगवती, राजेंद्र सरस्वती का बुवाई किसान भाई 10 से 15 जुलाई से कर सकते है। परंपरागत विधि में 20 से 22 दिन बिचड़ा तैयार करने में लगता है धान की सीधी बुवाई से किसान अपनी समय का बचत कर सकते है। साथ ही इस विधि द्वारा कदवा करने का खर्च रोपाई का खर्च तथा सिंचाई का खर्च में लगभग 4500 से 5000 प्रति एकड़ बचा सकते है।

भारती उपाध्याय।